जूलियन की कहानी...

ज़िम्बाब्वे से एक बच्ची की यात्रा का लेखा-जोखा

एंडी ग्लिन

चित्र: कार्ल हैमंड

जूलियन की कहानी...

ज़िम्बाब्वे से एक बच्ची की यात्रा का लेखा-जोखा

एंडी ग्लिन

चित्र: कार्ल हैमंड

जब मैं बहुत छोटी थी तब मैं और
मेरी मां एक फार्म पर रहते थे.
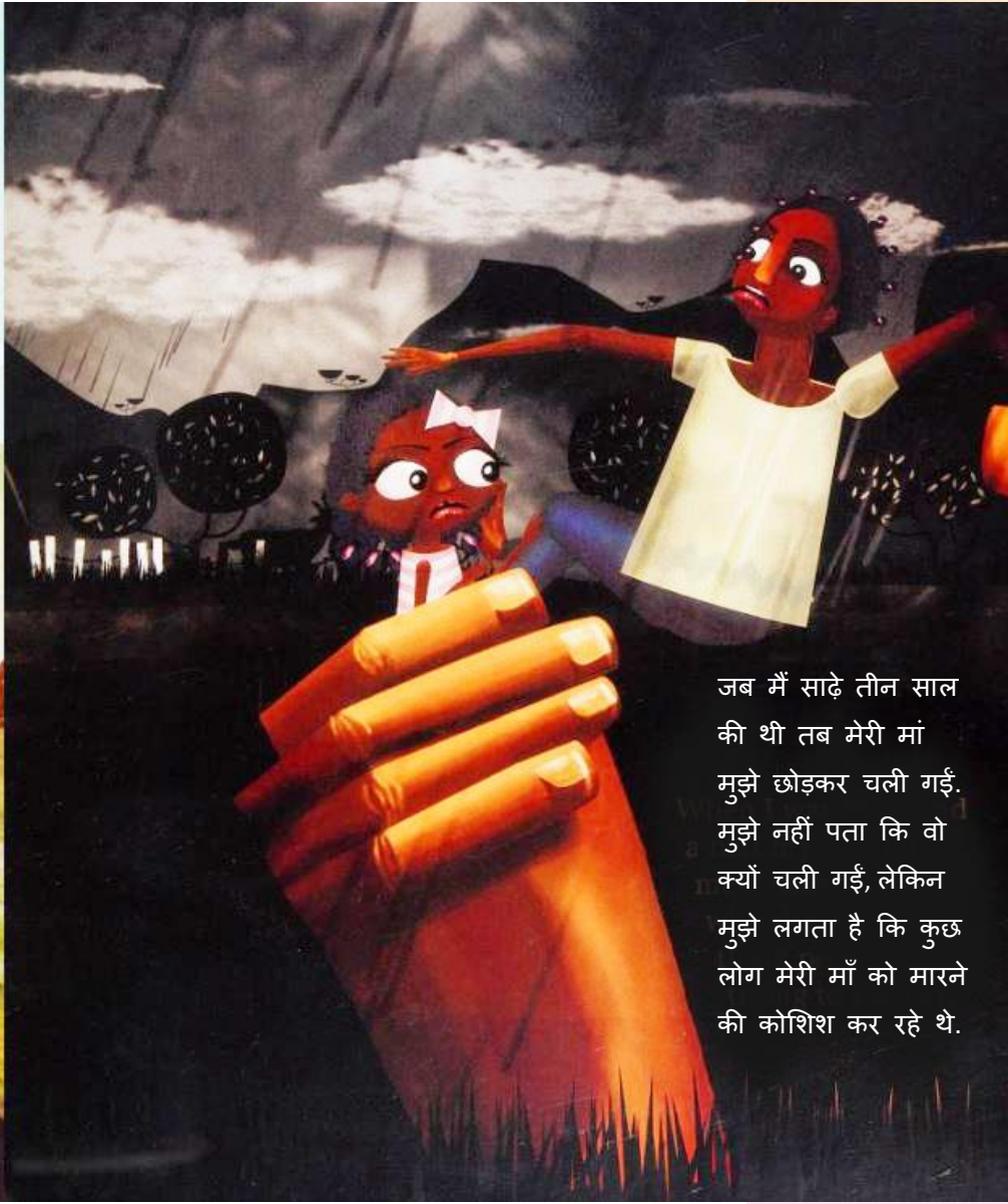
जब मैं साढ़े तीन साल
की थी तब मेरी मां
मुझे छोड़कर चली गईं.
मुझे नहीं पता कि वो
क्यों चली गईं, लेकिन
मुझे लगता है कि कुछ
लोग मेरी माँ को मारने
की कोशिश कर रहे थे.

उसके बाद चर्च के लोगों ने मेरी देखभाल की और मुझे पाला.
फिर मैंने अपनी माता-पिता के बिना जीना सीखा.
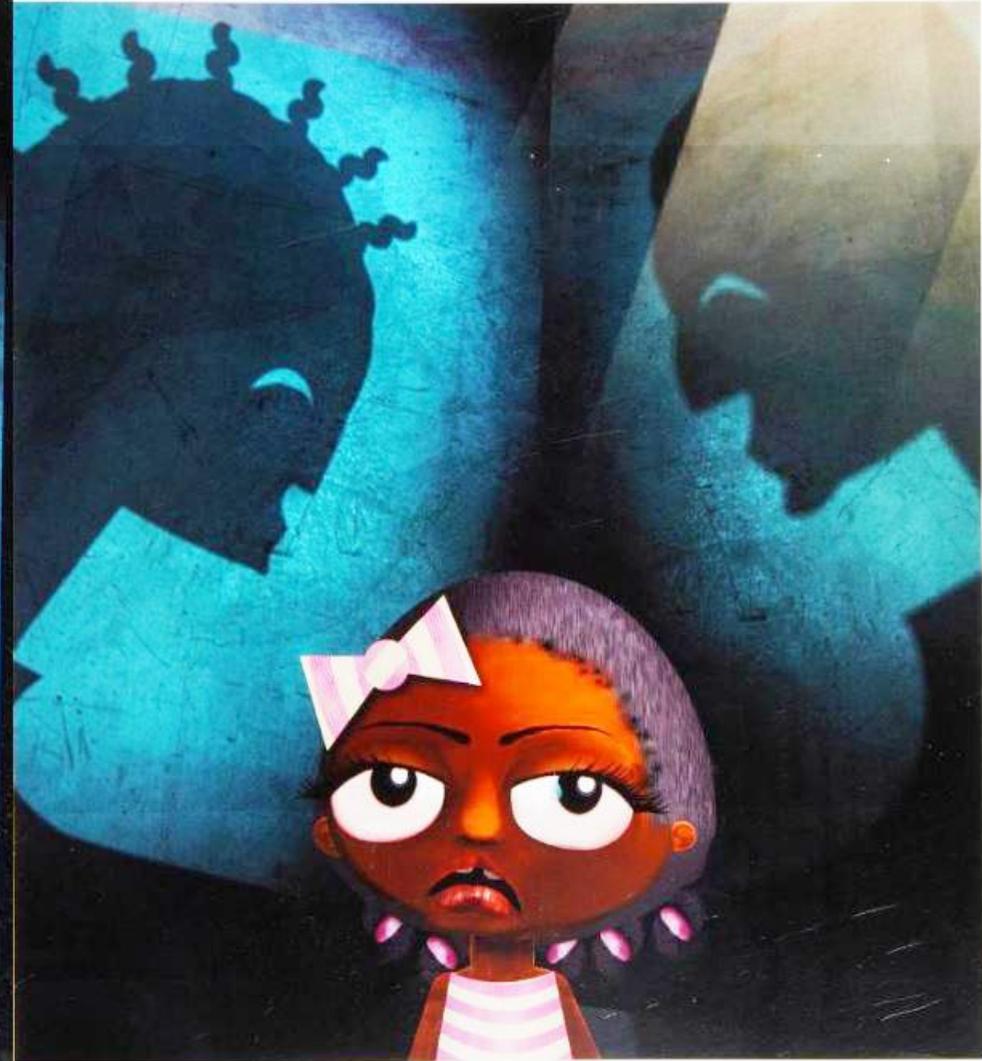
मुझे लगने लगा कि मेरे माता-पिता नहीं हैं.

लेकिन कहीं गहराई में मुझे लगता था कि मेरी
माँ वहाँ कहीं बाहर थी, और वो मुझे ढूंढ़ रही थी.
अनाथालय में लगभग
30 बच्चे एक बड़ी प्लेट
में से खाना खाने की
कोशिश करते थे.
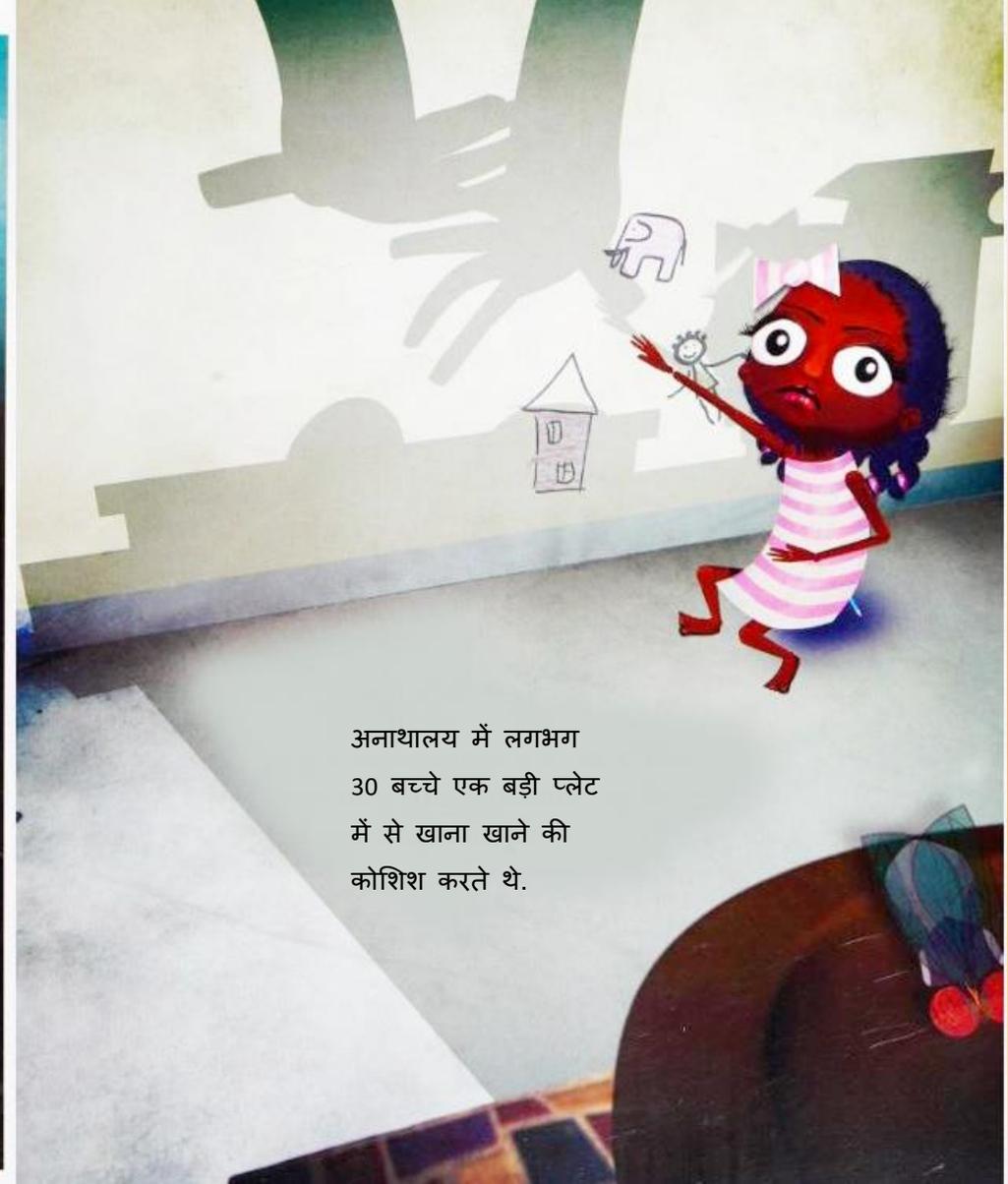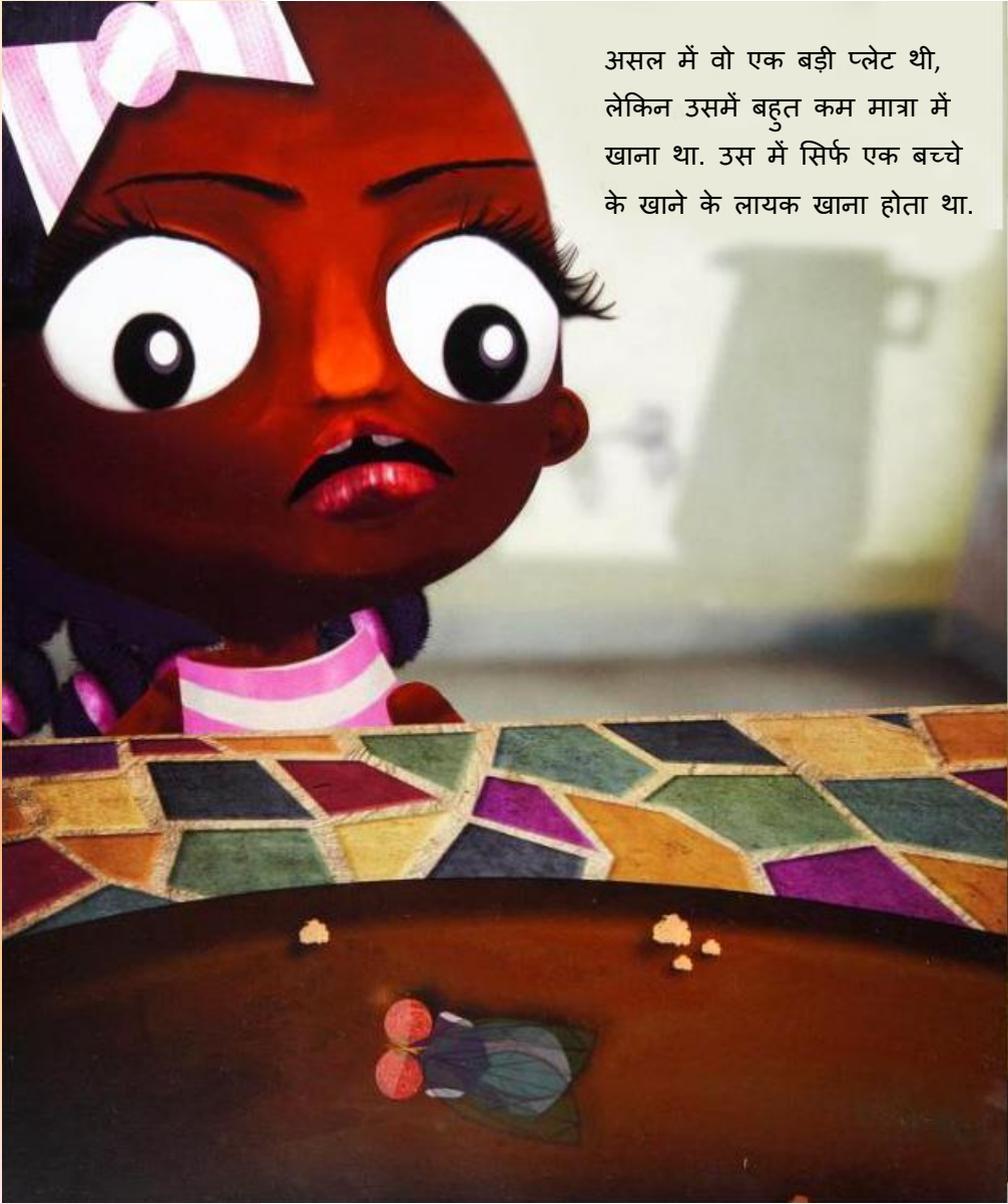
असल में वो एक बड़ी प्लेट थी, लेकिन उसमें बहुत कम मात्रा में खाना था. उस में सिर्फ एक बच्चे के खाने के लायक खाना होता था.

इसलिए मैं ज्यादा नहीं खा पाती थी. केवल एक चीज जिस पर मैं जीवित रही, वो था पानी. लेकिन वहाँ का पानी भी साफ नहीं था.

पानी घोंघे और अन्य गंदी चीजों से भरा था, लेकिन मेरे पास कोई विकल्प नहीं था - मुझे वो पीना ही था.
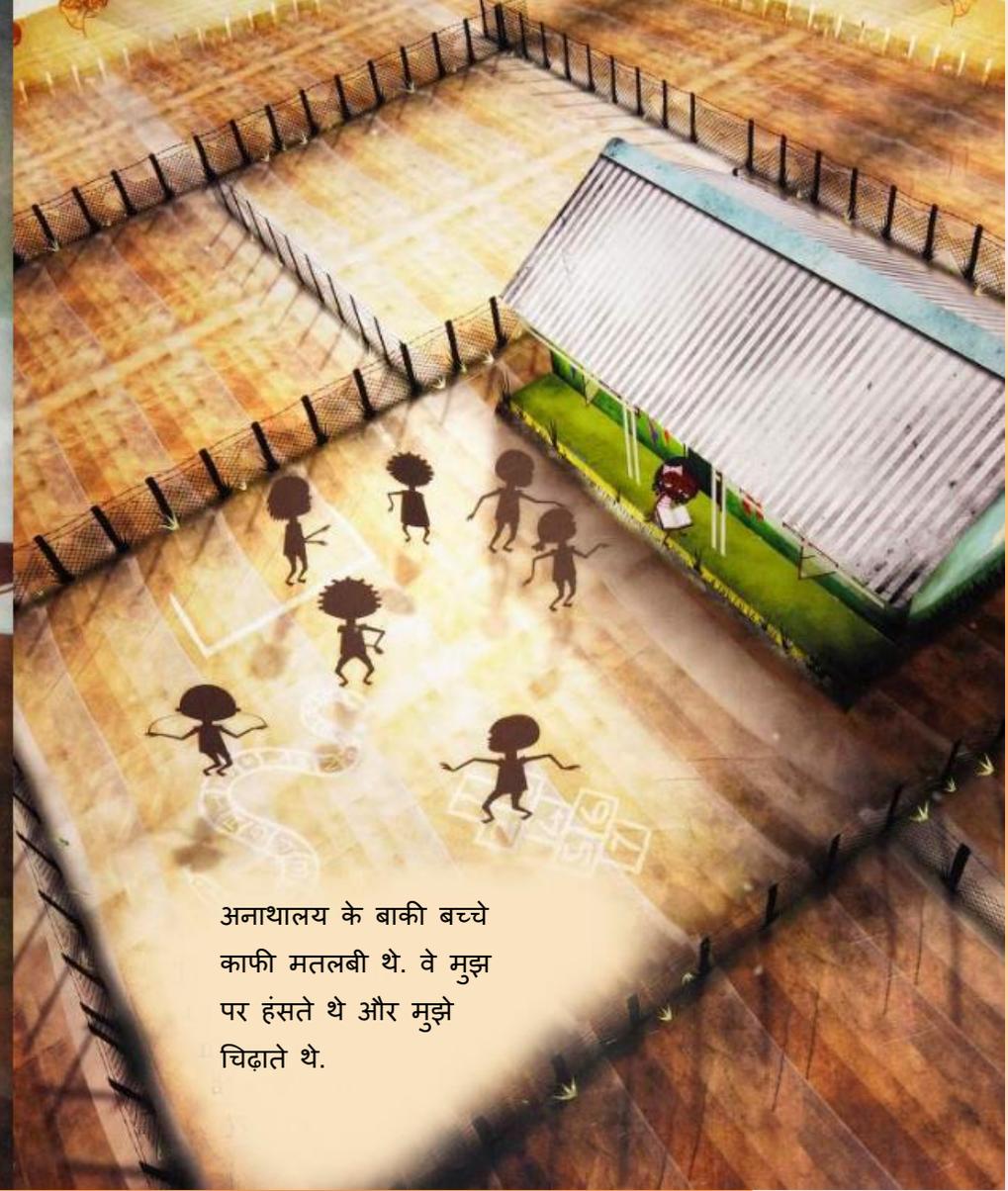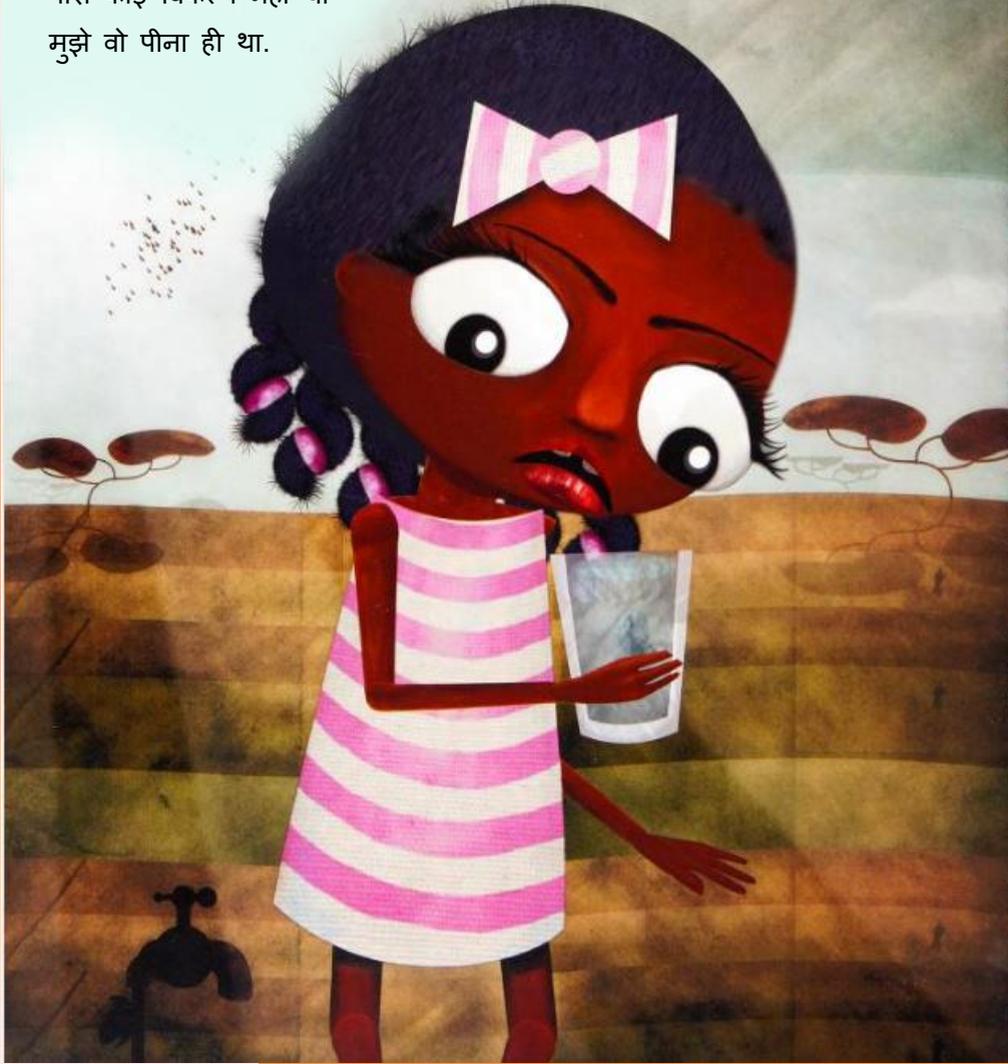
अनाथालय के बाकी बच्चे काफी मतलबी थे. वे मुझ पर हंसते थे और मुझे चिढ़ाते थे.
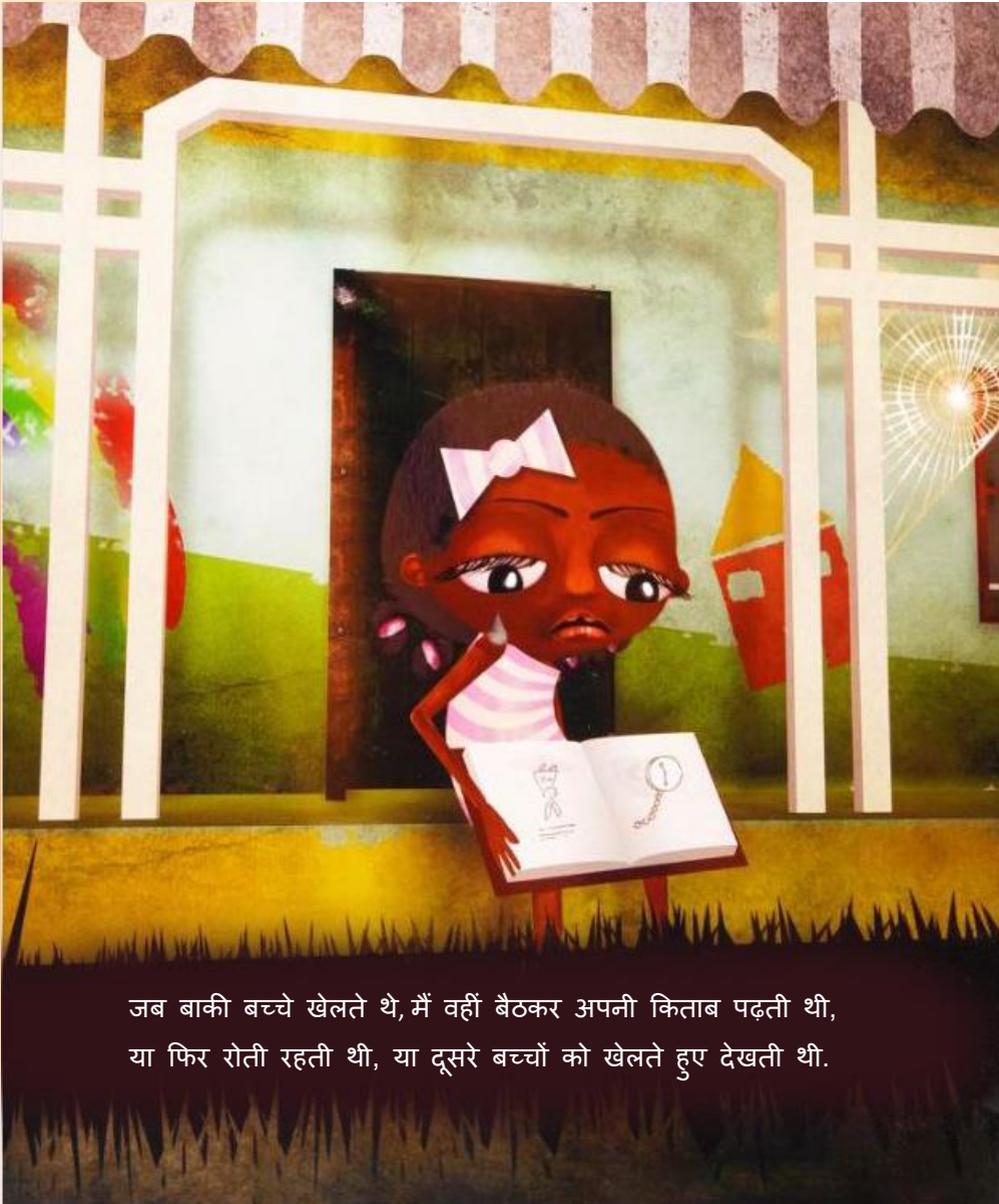
जब बाकी बच्चे खेलते थे, मैं वहीं बैठकर अपनी किताब पढ़ती थी,
या फिर रोती रहती थी, या दूसरे बच्चों को खेलते हुए देखती थी.
एक दिन वे हमें अनाथालय से
ले गए और उन्होंने हमें सैकड़ों
अन्य लोगों के साथ एक बड़ी,
अंधेरी लॉरी में लाद दिया.
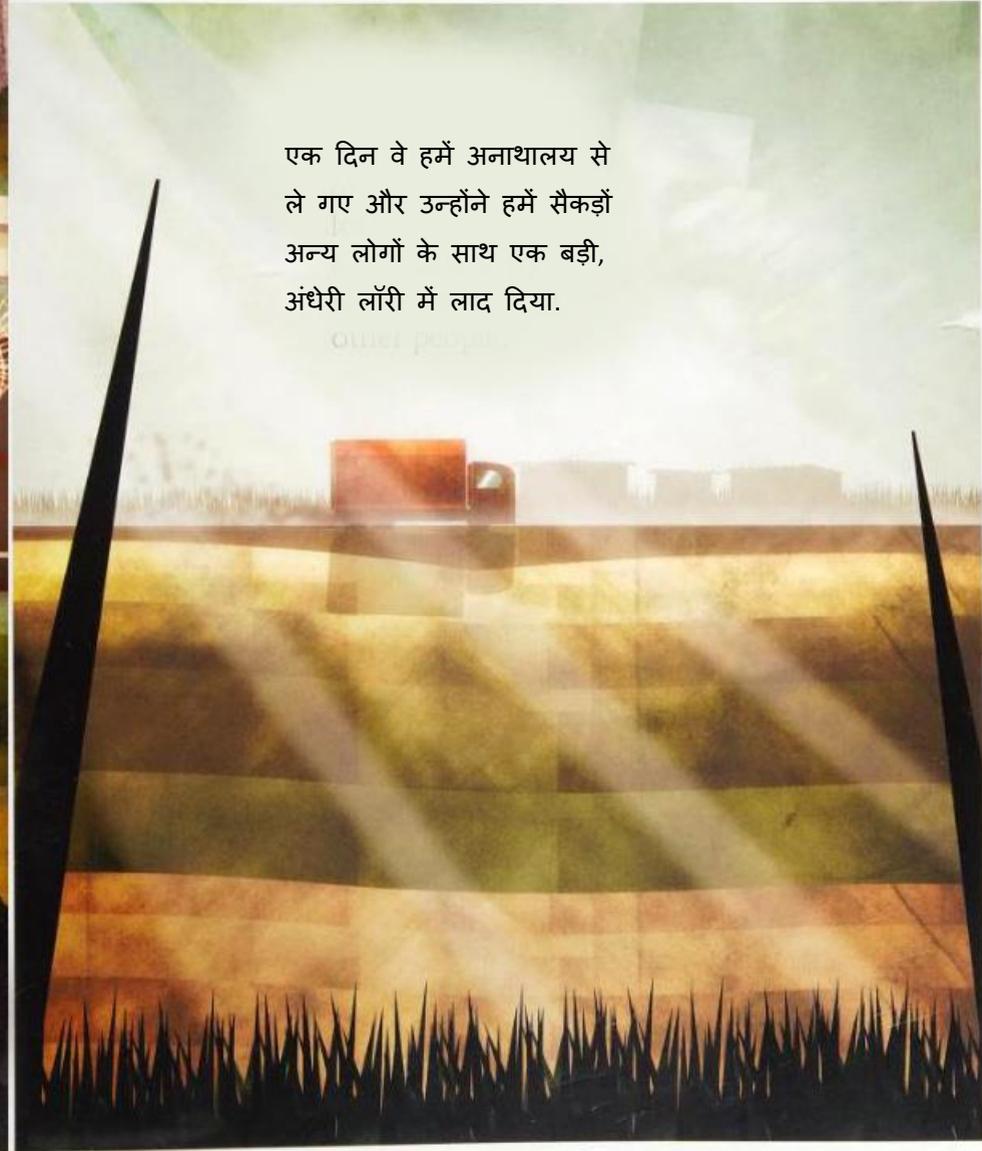
क्योंकि मैं छोटी थी, इसलिए मैं सबसे आखिरी में चढ़ी, इसलिए मैं पिछले दरवाजे के एकदम करीब थी.

अचानक मैंने एक महिला को देखा. उसके पास जूते नहीं थे. वो सिर्फ एक पाजामा और एक टी-शर्ट पहने थी. वो लॉरी के पीछे भाग रही थी और वो मेरा नाम चिल्ला रही थी!
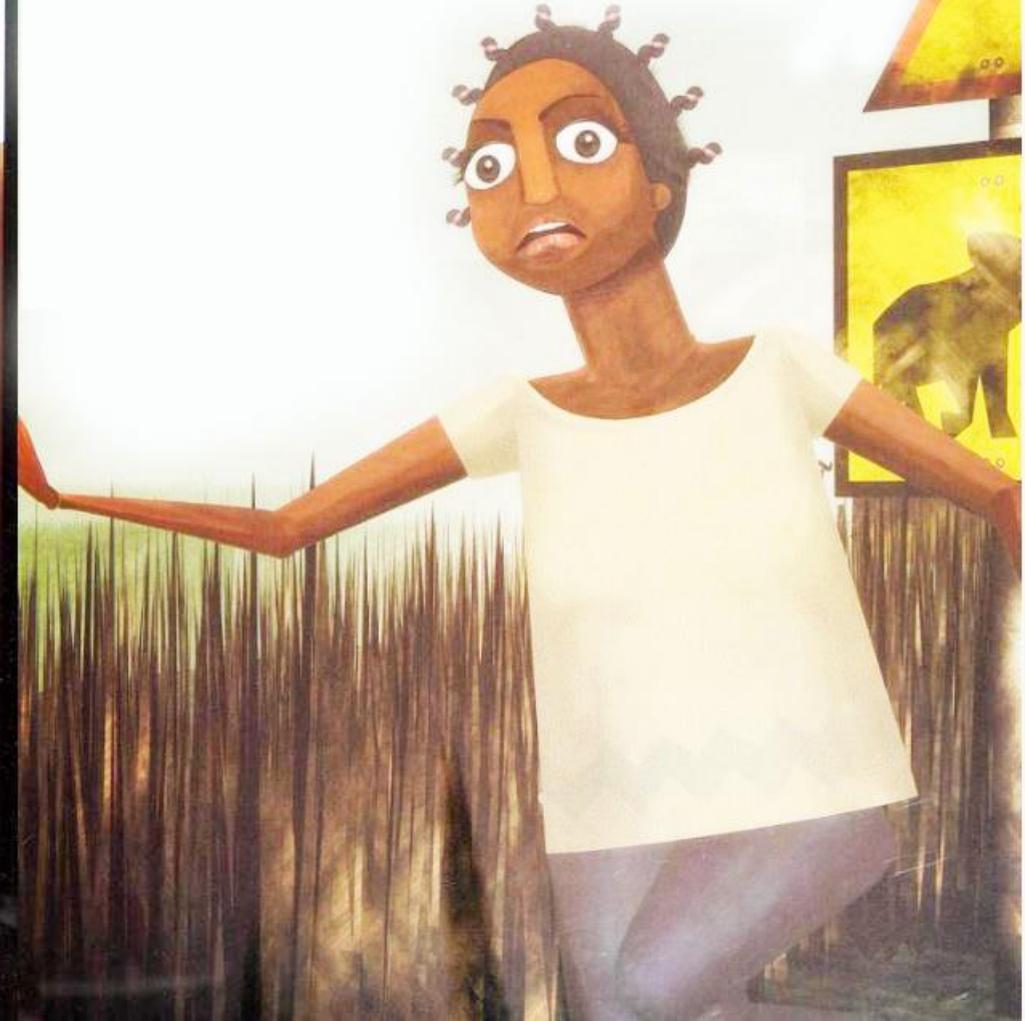
मैंने उसकी तरफ देखा और सोचा, "मुझे वो चेहरा याद है". वो मेरी माँ ही थी! मैं रोने लगी और लॉरी से बाहर निकलने की कोशिश करने लगी.

अब जब मैं सोचती हूँ तो मुझे काफी ताज्जुब होता है. पर पता नहीं कि मुझ में कहाँ से इतनी शक्ति मिली, लेकिन मैं लॉरी के पीछे से सीधे अपनी माँ की ओर कूद पड़ी.
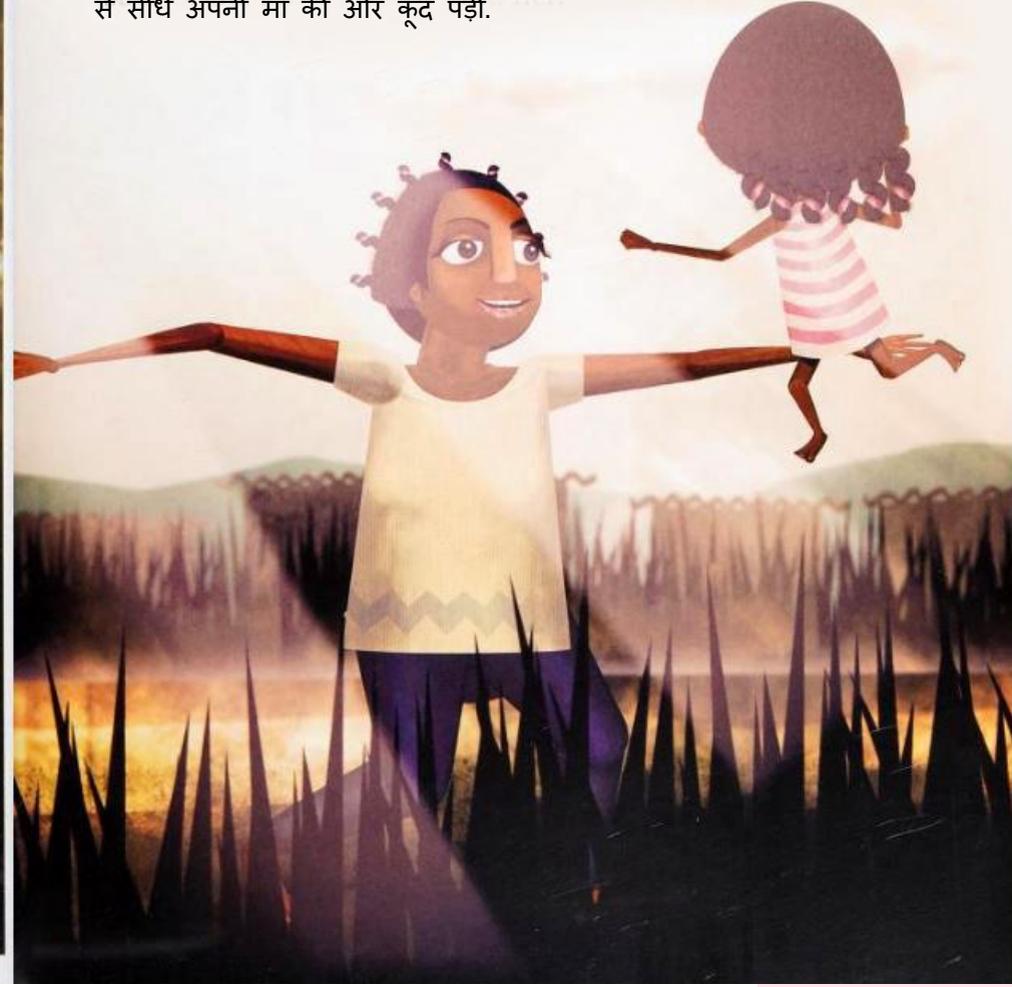
हम एक-दूसरे को पकड़े हुए थे. हम चिल्ला रहे थे और रो रहे थे. मुझे उस क्षण की असलियत पर विश्वास नहीं हो रहा था. उस क्षण के बाद से मेरे जीवन में सब कुछ बदल गया...

मेरी मां ने अधिकारियों के चक्कर काटे और अंत में उन्होंने मुझे विदेश यात्रा करने के लिए वीजा दिया.
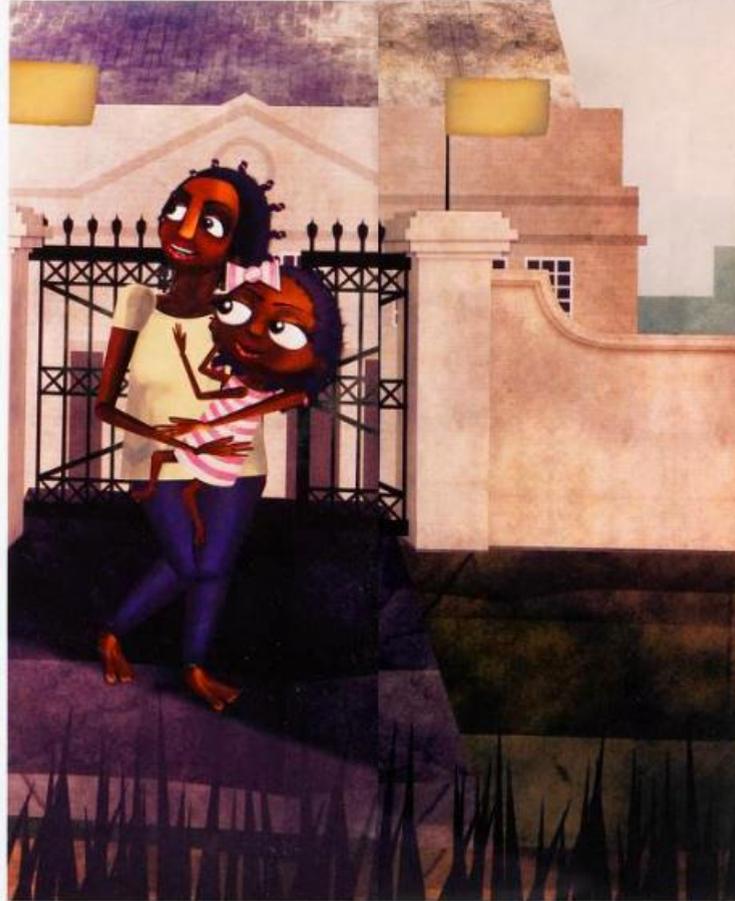
कुछ दिनों बाद हम एक विमान में सवार हुए और अपने नए देश पहुँचे.

मैं अपनी माँ के साथ नए देश में आकर खुश थी, लेकिन स्कूल में मेरा पहला दिन काफी कठिन था.
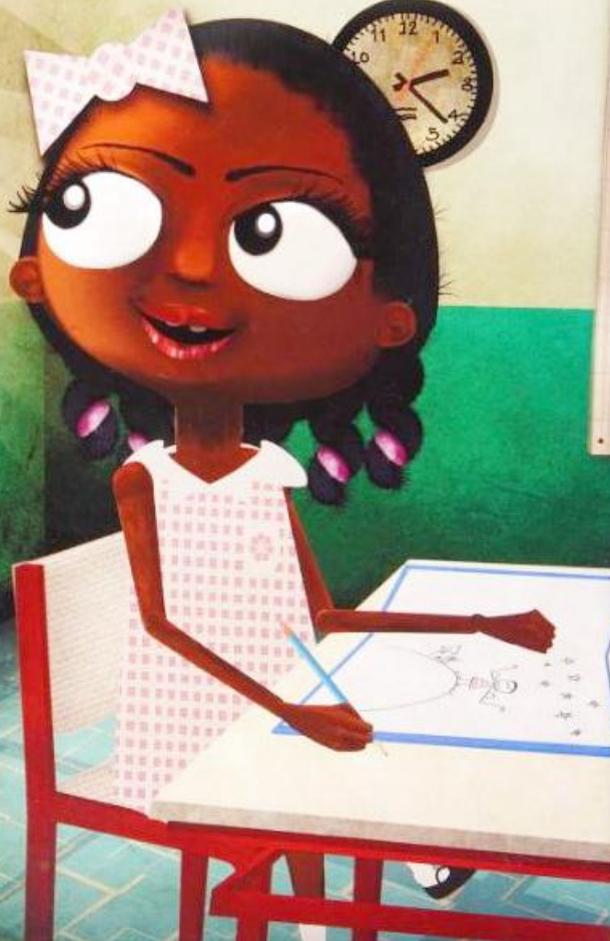
मैं बहुत बड़बड़ाती थी पर मैं लोगों से बातें करने से बहुत डरती थी.

मैं अक्सर बहुत चिंता करती थी और मुझे दौरे आते थे.
कभी-कभी मैं जब कक्षा में बैठती, तो मुझे पता ही नहीं चलता
था कि वहां क्या हो रहा है. उससे मुझे बहुत डर लगता था.

मेरे मन में एक भयानक विचार आता था कि जब
मैं घर लौटूँगी तो शायद मेरी माँ वहाँ नहीं होंगी!

उस समय मेरा दिल बहुत तेज़ी धड़कता था और कभी-कभी तो मैं बेहोश भी हो जाती थी.
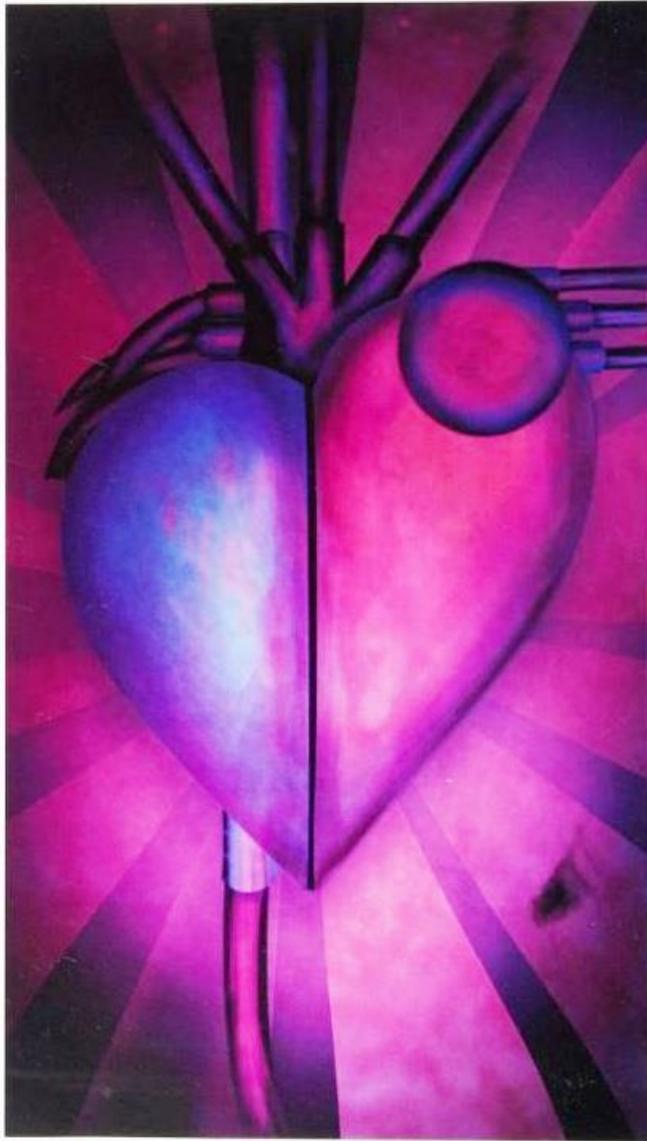
लेकिन मेरे स्कूल के अधिकारियों ने मेरे जैसे बच्चों के लिए यह विशेष ग्रुप बनाया था.

जब भी मुझे गुस्सा, उदासी या चिंता महसूस होती थी, तो मैं वहां जाती थी और वहां हमेशा कोई न कोई होता था जिससे मैं बात कर सकती थी. वे मेरी मदद करने और चीजों को ठीक करने की पूरी कोशिश करते थे.

अब मैं अपनी सामाजिक कुशलताओं को सुधार रही हूं, क्योंकि मैं जानती हूं कि मैं लड़ाकू हूं और मैं एक दिन ज़रूर ठीक हो जाऊँगी.

मैंने यह सीखा है कि तुमने चाहें कितनी भी पीड़ाएं और दुःख क्यों न झेले हों, फिर भी एक दिन तुमको ज़रूर स्वीकार किया जाएगा और तुम जैसे भी हो तुम्हें वैसे ही तुम्हें स्वीकार किया जायेगा.

फिर एक दिन तुम एक हीरो ज़रूर बनोगी.

और मुझे इतना ज़रूर समझ में आया कि जीवन में हरेक अंधेरी सुरंग के अंत में, हमेशा एक इंद्रधनुष होता है...